# कुलगीत

विद्या  सदन हैं सुन्दर ऐसा कही-कही है ।
देवर्षि-कृत मंदिर ,जैसा कही नहीं है ।।

देवर्षि का बगीचा , सौंदर्य का सलीका ।
लोचन ललित कलित है , मलयज हुआ है नीचा ।।

नित भारतीय भवन में ,आराम करने जाती ।
प्रार्थी को पाश्य करके , फुले नही समाती ।।

विद्या सदन हैं सुन्दर ऐसा कही-कही है ।
देवर्षि-कृत मंदिर ,जैसा कही नहीं है ।।

ब्राम्ही  जहां दिवस में , प्रतिदिन जगाई जाती ।
वनिता भी आके अपने ,अज्ञान को भगाती ।।

प्रांगण जहाँ अनेको , फैले हुए है पारित: ।
छविधाम से है मंडित , पक्की सड़क है अभित:।।

विद्या  सदन हैं सुन्दर ऐसा कही-कही है ।
देवर्षि-कृत मंदिर ,जैसा कही नहीं है ।।

अनुराग दासता में ,जीवन सुधा बरसती ।
अपलक ही आके कमला ,साभार से हरसती ।।

इतिहास हीन दीपित ,देवऋषि का है आसान ।
वैभव से ज्योति चुम्बित ,अनुराग से है शासन ।।

विद्या  सदन हैं सुन्दर ऐसा कही-कही है ।
देवर्षि-कृत मंदिर ,जैसा कही नहीं है ।।

विहाग सर्वजन का , सेवा का भाव मन में ।
करतल मिला-मिला के दृढ राष्ट्रभक्ति जन में ।।

सभार सर्वजन से , विनर्म है निवदेन ।
'रसाल ' भी है निवसित, वैभव का यह निकेतन ।।

विद्या  सदन हैं सुन्दर ऐसा कही-कही है ।
देवर्षि-कृत मंदिर ,जैसा कही नहीं है ।।